मेरा कॉलम

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'अरतृप्त'
मो. नं. 73 8657 8657

दो-एक्कम-दो, दो-दूनी-चार....

कहानी उस रहस्यमयी वस्तु से शुरू होती है, जिसका आकार किसी आतंकी संगठन के गुप्त दस्तावेज़ से छोटा, मगर प्रभाव हिरोशिमा के धमाके से ज़्यादा था। वह कोई बम नहीं था, मगर उसे देखते ही सत्तर प्रतिशत बच्चों का हाजमा खराब हो जाता था। वह एक ऐसी पहाड़े की किताब थी जिसके लिए कभी गाइड नहीं बनी, क्योंकि मौत के लिए कोई मैनुअल नहीं आता। जैसे ही एक अबोध बालक अंकों की दुनिया का वीज़ा लेकर पहली से दूसरी कक्षा के इमिग्रेशन काउंटर पर पहुँचता, उसके झोले में वह अदृश्य डायन चुपके से डाल दी जाती। वह वज़न में महज़ दस पन्नों की थी, पर उसकी हस्ती सामाजिक विज्ञान और भारी-भरकम विज्ञान की किताबों को वैसे ही बौना कर देती थी जैसे किसी बाहुबली के सामने एक छोटा सा डेथ वारंट। सवाल यह था कि इसे बनाया किसने? किसने उस स्याही में बच्चों के आँसू मिलाए थे? घर में नई किताबों का शोर मचता, तो माँ-बाप सब खरीद लाते, पर उस महाग्रंथ के नाम पर वही पुरानी, कोनों से मुड़ी हुई, बड़े भाई की थूक से सनी और शल्यावस्था में पहुँची लाला थमा दी जाती। तर्क यह दिया जाता कि गणित के नियम तो शाश्वत हैं, वे किसी फैशन की तरह नहीं बदलते। कहते– कांई रे छोरा, ई पुरानी पोथी ने देखर रोवै क्यूं है? अक्कल चराबा गई है कांई? बापू की है, फेर थारे भाई की हुई, अब थारी है! ज्ञान कदे ई जुणो कोनी होवै, और गणित तो वै ई रैवैली जो म्हारै टेम ही! यह कहकर वह दस पैसे वाली तबाही आपके सुपुर्द कर दी जाती और यहीं से उस सस्पेंस की नींव पड़ती कि क्या आप तीसरी कक्षा का सूरज देख पाएंगे या इस दो-दूनी-चार के चक्कर में ही शहीद हो जाएंगे? उस फटी हुई किताब की गंध आज भी नाकों में वैसी ही है जैसे किसी पुराने गुनाह की याद।

उस किताब का असली आतंक तब शुरू होता जब एक का पहाड़ा (जो सबको मुफ़्त के ज्ञान की तरह आता था) खत्म होकर दो के पहाड़े की दहलीज पर दम तोड़ता। मास्टर साहब एक ऐसी विशेष रागिनी में शुरू करते जो न तो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में थी, न ही कर्नाटक संगीत में। वह टेबल्स का नहीं, टैबल्स का मातम था। दो-एकम-दो, दो-दूनी-चार... की वो लय ऐसी थी कि अगर आप उसे किसी संगीत सभा में गा दें तो गायक आत्मदाह कर ले। अचरज यह कि आखिर इस राग में ऐसा क्या जादू था जिसने भारतीय शास्त्रीय रागों की कतार में खुद को स्थापित कर दिया? अगर आप सुर बदल दें, तो पहाड़ा वहीं कोमा में चला जाता। शायद इसीलिए इसे कंठस्थ करना कहा गया, क्योंकि इसे दिमाग पर चढ़ाना (शायद इसीलिए गणित के इस बोझिल पहाड़ पर चढ़ने-चढ़ाने की प्रक्रिया को पहाड़ा कहा जाता है) उतना ही मुश्किल था जितना किसी गधे को एवरेस्ट फतह करवाना। मास्टर साहब जब हाथ में बेंत लेकर उस राग को छेड़ते, तो अछे-अच्छे वेदांतियों का पसीना छूट जाता। इसीलिए भलमानुस कहते– अरे भाई, या तो वो राग गा सको है, या पहाड़ा याद कर सको है, दोन्यां काम सागे नी होवै! जुरा सो ई सुर चूक्यो नी, और मास्टर की लाठी थारी पीठ पर तबला बजाई नी! चुपचाप गा, नीं तो कूबा कर द्यूंला! इस सुरमयी प्रताड़ना के बीच सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि आखिर नौ का पहाड़ा आते-आते सबकी आवाज़ बेस से ट्रेबल क्यों हो जाती थी? वह राग आपके बचपन के वाइब को पूरी तरह खत्म कर देता था और आप बस एक ऐसी मशीन बन जाते थे जो बिना सोचे-समझे बस चिल्लाते रहते थे। वह चिल्लाना पहाड़ा नहीं था, वह एक मासूम आत्मा की पुकार थी जो उस दस पन्नों की कैद से आज़ाद होना चाहती थी।

हर क्लास में एक ऐसी मास वार्निंग दी जाती थी जो किसी युद्ध के अल्टीमेटम से कम नहीं थी– जब तक बीस तक पहाड़े (बीस-बीसां चार सौ) कंठस्थ नहीं होंगे, अगली क्लास का मुँह नहीं देखोगे! यह एक ऐसा दुष्कर कार्य था जिसे आज तक कोई सुलझा नहीं पाया कि आखिर मानव क्षमता की सीमा बीस पर ही क्यों आकर मर जाती है? क्या इक्कीसवाँ पहाड़ा पढ़ने से दिमाग फट जाता था? जैसे-जैसे क्लास बढ़ती, वैसे-वैसे लक्ष्य का दायरा– दस-दसों से बारह-बारह, फिर सोलह और अंततः उस खौफनाक बीस तक पहुँचता। जब मास्टर साहब के सामने खड़े होकर पहाड़ा उगलने की बारी आती, तो दिल की धड़कनें किसी हॉरर फिल्म के बैकग्राउंड स्कोर को मात देने लगती थीं। अच्छे-भले छह छक्के छत्तीस बोलने वाले बच्चे मास्टर के खौफनाक चेहरे को देख छह छक्के बयालीस बोलकर अपनी नियति चुन लेते थे। तब मास्टर कहते– कांई रे छोरा, छह छक्के बयालीस कद स्यूं होण लागग्या? थारी अकल के चरौंण गई है? जा, पाछो लाइन में खड़ा हो जा और फेर स्यूं मर! आज तो थारो राम ई राखेगो! उस समय बीस का पहाड़ा सुना देना ऐसा था जैसे किसी ने बिना ऑक्सीजन के के-2 पर्वत पर तिरंगा फहरा दिया हो। चुनौती यह थी कि क्या अगले साल फिर से यही युद्ध लड़ना होगा या सत्ताईस का पहाड़ा भी सिलेबस में अचानक एंट्री मार लेगा? वह बीस का आंकड़ा एक ऐसी दीवार थी जिसे पार करना उस दौर के हर बच्चे का लाइफ गोल था, पर अफसोस कि आधे से ज्यादा बच्चे उस दीवार के नीचे ही दबकर रह जाते थे।

लेकिन असली रोमांच तो मास्टर साहब के उस मनोवैज्ञानिक युद्ध में था, जहाँ पहाड़ा सही होने पर भी आपको अपराधी महसूस कराया जाता। मान लीजिए आपने पूरी लय और ताल के साथ आठ सत्ते छप्पन कह दिया। मास्टर साहब अपनी आँखों को सिकोड़कर, चश्मे के ऊपर से देखते हुए गरजते– क्या? छप्पन??? बस, वो एक पल का संदेह उस नन्हे दिमाग में सुनामी ला देता। खुद पर से भरोसा वैसे ही उठ जाता जैसे किसी बड़े स्कैम के बाद जनता का सिस्टम से। बच्चा डर के मारे तुरंत अपने सही उत्तर की हत्या करता और कहता– नहीं सर, चौंसठ! और यहीं ट्रेजेडी पूरी होती। दो बेंत की मार, लाल हाथ और लाइन में सबसे पीछे जाने का अपमान– यह उस समय का ट्रॉमैटिक दर्द था जिसे रिकॉर्ड करने के लिए तब कैमरे नहीं थे। लड़कियाँ तो नौ-अट्ठे पर पहुँचकर ऐसी शून्य दृष्टि से आकाश की ओर देखती थीं जैसे साक्षात ईश्वर उतरकर बहतर कान में बोल जाएगा। अरे ओ रुखड़ा, तनै सांचो बोल्यो हो, फेर पलटी क्यूं मारी? अब खा मार और जा कोन्या में खड़ो हो जा! थारी बुद्धि तो ओळ्या में ई रळगी! ईश्वर भी तब मास्टर साहब की बेंत में ही निवास करता था, जो हर गलत उत्तर पर प्रसाद के रूप में बरसती थी। मजेदार बात यह थी कि आखिर मास्टर जी को सही जवाब पर क्या? बोलने में क्या आनंद मिलता था? वह एक ऐसा टॉक्सिक रिलेशनशिप था जहाँ आप सही होकर भी हमेशा गलत ही साबित होते थे।

हर बैच में एक-दो ऐसे जीव होते थे जिन्हें हम आज की भाषा में मेन कैरेक्टर और पुराने समय में चापलूस कह सकते हैं। ये पता नहीं कब और कैसे उस ज़हर को पी लेते थे, पर मास्टर के सामने आते ही रेंकट की गति से पहाड़े उगलने लगते। जब वे अपना परफॉरमेंस खत्म कर दुनिया जीतने वाले विजेता की तरह बाकी बच्चों की ओर देखते, तो मन करता कि उन पर कैसेल कल्चर लागू कर दिया जाए। पर बेबसी ऐसी कि हम सिर्फ जल-भुनकर रह जाते। रह-रहकर सवाल उठता कि ये प्राणी खाते क्या थे? क्या इनके खून में ही कैलकुलेटर दौड़ते थे? उनके चेहरे की वो घृणित दया और हमारी आँखों का वो लाचार पानी– यह आज के किसी भी इमोशनल ड्रामा से ज़्यादा गहरा था। कांई रे लाला, यो तो सत्रह को पहाड़ो ईंयां सुणा रह्यो है जणूं बीरा री शादी में गीत गा रह्यो होवे! थनै तो एक को पहाड़ो ई नी आवे! शर्म कर थोड़ी, डूब मर चुल्लू भर पाणी में!– ये जलन उस समय के हर औसत बच्चे के सीने में सुलगती थी। ये दरबारी बच्चे मास्टर के चहेते होते थे और संदेह होता कि क्या ये कभी भविष्य में जाकर नासा के वैज्ञानिक बनेंगे या बस किसी बैंक में कैशियर बनकर पहाड़ों की इस विरासत को गाली देंगे? उनकी सफलता हमारे लिए एक ऐसा ट्रॉमा थी जिसे भुलाने में सालों लग गए, क्योंकि उनकी वजह से हमारी पिटाई की तीव्रता दोगुनी हो जाया करती थी।

जब पहाड़ा सीधा याद हो जाता, तो मास्टर साहब गेम के रूल्स वैसे ही बदल देते जैसे कोई विलेन ऐन वक्त पर अपनी चाल बदलता है। वे कहते– अब उल्टा सुनाओ! यानी दो सौ से शुरू होकर बीस पर खत्म करना। यह वैसे ही था जैसे किसी को सीधे चलने की आदत हो और उसे कहो कि उल्टा दौड़ो हुए स्टेशन पहुँचो। अगर कोई सूरमा इसे भी फतह कर लेता, तो फिर रैंडम फायरिंग शुरू होती– बता, तेरह अट्ठे कितने? अब यहाँ असली राग की ऐसी-तैसी हो जाती। क्योंकि दिमाग को उस आंकड़े तक पहुँचने के लिए पूरा गाना शुरू से गाना पड़ता था। जब तक आप तेरह एकम तेरह से शुरू होकर तेरह अट्ठे तक पहुँचते, मास्टर साहब की बेंत आपके कूल्हों का भूगोल बदल चुकी होती। अरे ओ बांवळ्या, मूंढो के फाड़ रह्यो है? तेरह अट्ठे के थारो बाप बतावैगो? जल्दी बोल नी तो आज खाल उधेड़ द्यूंगा! थारी मती तो पूरी ई मारी गई! यह भय कि कब कौन सा अंक पूछ लिया जाए, बच्चों को चंगुल से निकलने ही नहीं देता था। यह एंग्जायटी का वह चरम स्तर था जिसे आज के मनोवैज्ञानिक पैनिक अटैक कहते हैं, पर तब इसे बस गणित का घंटा कहा जाता था। उस रैंडम फायरिंग में कितने ही मासूमों का आत्म-सम्मान शहीद हो गया, इसका कोई डेटा किसी सरकारी फाइल में मौजूद नहीं है।

यही नहीं, घर पर भी चैन नहीं था। जो भी मेहमान आता, वह आपके लिए समोसे नहीं, बल्कि मानसिक प्रताड़ना लेकर आता था। चाय का घूँट भरते ही उनका पहला सवाल– बेटा, कौन सी क्लास में हो? चौदह सत्ते कितने? मानो पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था उस बच्चे के चौदह के पहाड़े पर टिकी हो। रिश्तेदारों का वो मैथमेटिकल टेररिज़्म इतना ज़्यादा था कि बच्चे उन्हें देखते ही खेतों की ओर या लैट्रिन में छिप जाते थे। क्या ये मेहमान खुद कभी बीस का पहाड़ा सुना पाए थे? कांई रे लाला, म्हानै भी सुणा दे एक पहाड़ो, या थारो अकल चरौंण गयो है? म्हारा छोरा ने तो पच्चीस तक आवै है! थारो तो काळजो ई नी काम करे!– ऐसे तानों के बीच बचपन एक कटी हुई पतंग की तरह फड़फड़ाता रहता था। हर रिश्तेदार एक चलता-फिरता विलेन था और बच्चा एक ऐसा कैदी जिसका कोई वकील नहीं था। अगर मेहमान ने पंद्रह का पहाड़ा पूछ लिया और आपने सुना दिया, तो क्या वो जेब से दस रुपये निकालेगा या बस शाबाश बोलकर समोसे चट कर जाएगा? अक्सर वो समोसे ही खाता था और हम अपनी हार का घूँट पीकर रह जाते थे। वह अपमान आज भी किसी पुराने ज़ख्म की तरह रह-रहकर टीस मारता है।

आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो उस दस पन्नों की किताब में केवल पहाड़े नहीं थे। वह एक माइक्रो-महाकाव्य था जो हमें हारना और गिरकर संभलना सिखाती थी। उसके हर पन्ने के नीचे एक नीति वचन, एक मुहावरा या कोई गहरा दोहा छिपा होता था जो हमें बताता था कि ज़िंदगी गणित से कहीं ज़्यादा कठिन है। अंतिम पन्नों पर हफ़्तों के नाम, ऋतुएँ, नक्षत्र और यहाँ तक कि हिंदी और अंग्रेजी के महीनों के नाम भी होते थे। वह किताब हमें पहली बार बताती थी कि इस देश में अंकों का अपना एक संगीत है जो मार खाने के बाद और सुरीला हो जाता है। आज के कैलकुलेटर और आईपैड वाली पीढ़ी ने उस पहाड़े की किताब को कूड़े में फेंक दिया है। उसके साथ ही मर गया वह राग, वह अनुशासन और वह सांस्कृतिक विरासत जो हमें ज़मीन से जोड़ती थी। वह सस्पेंस कि क्या हम कभी बीस तक पहुँच पाएंगे, आज गूगल सर्च की दुनिया में खो गया है। देख रे टाबर, आजकाल रा टाबर तो फोन में ई मगन है, पहाड़ा तो भूल ही गया! म्हारो टेम ई चोखो हो, मार खार ई अकल तो आई! अब तो सगळो ई काम राम भरोसे है! अगर वाकई में आप अपनी सुस्त पड़ती बुद्धिमत्ता को बचाना चाहते हैं, तो जाइए, बाज़ार से वह हॉरर बुक खरीदिए और उसे उल्टा याद कीजिए। वरना यह जेन-जी वाली पीढ़ी देखते-देखते आपका दिमाग भी किसी दिन शून्य के पहाड़े पर आकर रुक जाएगा और चुनौती रहेगी कि क्या आप फिर से कभी दो दूनी चार के उस सरल संसार में लौट पाएंगे जहाँ मार में भी प्यार था?

किसान जन आंदोलन यात्रा पहुंची निवाली किसानों की समस्याओं पर बुलंद की आवाज

पानसेमल विधानसभा में किसान कांग्रेस द्वारा निकाली जा रही यात्रा

निवाली-: किसानों की विभिन्न समस्याओं को लेकर किसान कांग्रेस द्वारा निकाली जा रही किसान जन आंदोलन यात्रा सोमवार को निवाली पहुंची। यात्रा के निवाली पहुंचने पर बस स्टैंड स्थित बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर चौराहा पर किसान जन आंदोलन के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

यह यात्रा पानसेमल विधानसभा क्षेत्र के पलसूद से खेतिया तक निकाली जा रही है, जो सोमवार को निवाली पहुंची। किसान कांग्रेस के अनुसार, यात्रा का मुख्य उद्देश्य किसानों से सीधा संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं को संकलित कर शासन-प्रशासन तक पहुंचाना है। फसलों के उचित समर्थन मूल्य, मंडियों में व्याप्त अव्यवस्थाएं, तौल व भुगतान में देरी तथा कृषि उपज के उचित दाम नहीं मिलने जैसे मुद्दों को लेकर यह यात्रा निकाली जा रही है। यात्रा में किसान कांग्रेस जिलाध्यक्ष सीलदार सोलंकी, पूर्व लोकसभा प्रत्याशी पोरलाल खरते, विक्रम आछालिया, किसान कांग्रेस के जिला उपाध्यक्ष महेश चौहान, कांग्रेस जिलाध्यक्ष नागेश चौधरी, नासीर खान, समिल खत्री, मोटा खेड़कर, अजय ठक्कर, प्रदीप जाधव, अशोक राठौड़, पवन बंसल, दीपक निंगवाल, रामेश्वर जाधव, रमेश चौहान, सुभद्रा मनीष बाल्हणे, मयूर परमार, निलेश चौहान, चिंटू किराड़े, धरम खरते आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

हाईवे पर गोलियों की गूंज : राजस्थान का कुख्यात हत्यारा अमन उर्फ बाबर आष्टा में दबोचा

कोटा की हत्या के बाद फरारी पर निकले तीन शातिर बदमाश, एमपी में रच डाली गोलीबारी की वारदात

आष्टा। इंदौर-भोपाल हाईवे पर ग्राम कचनारिया जोड़ के पास 2 फरवरी 2026 को हुई ताबड़तोड़ गोलीबारी के मामले ने बड़ा खुलासा किया है।

आष्टा पुलिस के हत्थे चढ़े तीनों आरोपी कोई साधारण अपराधी नहीं,बल्कि राजस्थान के खूंखार और वांछित बदमाश निकले। गिरफ्तार आरोपियों में अमन उर्फ बाबर उर्फ सेवी, शहनवाज अंसारी उर्फ सोबू एवं विक्की उर्फ राजा अली शामिल हैं, जो कोटा (राजस्थान) में हत्या कर फरार चल रहे थे।

पुलिस जांच में सामने आया है कि मुख्य आरोपी अमन उर्फ बाबर एक अत्यंत दुर्दांत और शातिर हत्यारा है, जिसके विरुद्ध राजस्थान और मध्यप्रदेश में हत्या, हत्या के प्रयास, लूट, डकैती एवं आर्म्स एक्ट के एक दर्जन से अधिक संगीन मामले दर्ज हैं। वर्ष 2025 में जिला बारा (राजस्थान) में की गई हत्या के बाद से अमन फरार था और गिरफ्तारी से बचने के लिए लगातार ठिकाने बदल रहा था।

फरारी के दौरान फिर रची गोलियां

पुलिस के अनुसार, हत्या के बाद अमन अपने साथियों के साथ गुना और भोपाल होते हुए इंदौर भागने की फिराक में था। इसी दौरान आष्टा थाना क्षेत्र में इंदौर-भोपाल हाईवे पर गोलीबारी कर दहशत फैलाने की कोशिश की,लेकिन सतर्क पुलिस ने बदमाशों की योजना पर पानी फेरते हुए तीनों को मौके पर ही दबोच लिया।

एमपी-राजस्थान पुलिस को चकमा देता रहा अमन

अमन के खिलाफ हत्या के प्रयास के चार प्रकरण, जबकि मध्यप्रदेश के श्योपुर जिले में बंदूक से फायर कर हत्या के प्रयास का मामला भी दर्ज है। इतना ही नहीं,फरारी के दौरान भी उसने राजस्थान में एक और हत्या के प्रयास की वारदात को अंजाम दिया। शातिर अपराधी होने के चलते वह लंबे समय तक पुलिस को चकमा देता रहा, लेकिन आष्टा पुलिस की सख्ती के आगे आखिरकार ढेर हो गया।

साथी भी निकले कुख्यात

सह आरोपी शहनवाज अंसारी उर्फ सोबू के विरुद्ध कोटा शहर में हत्या के प्रयास, लूट, डकैती एवं आर्म्स एक्ट के नौ गंभीर मामले दर्ज हैं, जबकि तीसरे आरोपी विक्की उर्फ राजा अली के खिलाफ भी बारा जिले में आर्म्स एक्ट व हत्या के प्रयास के दो प्रकरण न्यायालय में लंबित हैं।

कड़ी सुरक्षा में पेशी, सीधे जेल

तीनों बदमाशों को आष्टा पुलिस ने भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच न्यायालय में पेश किया, जहां से उनका जेल वारंट जारी कर जिला जेल सीहोर भेज दिया गया। राजस्थान पुलिस को भी आरोपियों की गिरफ्तारी की सूचना दे दी गई है और आगे की कार्रवाई न्यायालयीन प्रक्रिया के तहत की जाएगी।

पुलिस टीम की दमदार कार्रवाई

इस सनसनीखेज कार्रवाई में एसडीओपी प्रवीण चडोकर, थाना प्रभारी गिरिश दुबे सहित पूरी पुलिस टीम की भूमिका सराहनीय रही, जिनकी मुस्तैदी से एक बड़े आपराधिक नेटवर्क पर शिकंजा कसा गया।

महामहिम राज्यपाल के प्रस्तावित कार्यक्रम के मद्देनजर

कलेक्टर ने नागलवाड़ी में तैयारियों का लिया जायजा

बड़वानी। महामहिम राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल के राजपुर क्षेत्र के नागलवाड़ी में प्रस्तावित कार्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में कलेक्टर श्रीमती जयति सिंह ने मंगलवार नागलवाड़ी स्थित कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया।

इस दौरान कलेक्टर श्रीमती सिंह ने हेलीपैड स्थल, कार्यक्रम स्थल पर मंच व्यवस्था, बैठक व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, बैरीकेटिंग, पार्किंग व्यवस्था और आवागमन के रास्तों का अवलोकन किया। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी विभागीय अधिकारी आपसी समन्वय से कार्य करें। निर्धारित समय-सीमा में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं पूर्ण की जाएं। सुरक्षा और प्रोटोकॉल का पूरी तरह पालन सुनिश्चित हो।

बाबा भिलट देव के दर्शन और सुख-समृद्धि की कामना : कलेक्टर श्रीमती जयति सिंह ने नागलवाड़ी स्थित सुप्रसिद्ध बाबा भिलट देव मंदिर में दर्शन किए। उन्होंने मंदिर में पूजा-अर्चना कर जिले की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। दर्शन के बाद उन्होंने मंदिर परिसर का भ्रमण किया और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया। इस दौरान संयुक्त कलेक्टर रवि वर्मा, एसडीएम राजपुर कुमार सानू देवडिया संबंधित विभागों के प्रमुख उपस्थित थे।

जिला जनगणना समन्वय समिति का हुआ गठन

बड़वानी। जनगणना 2027 संबंधी गतिविधियों के सफल संचालन एवं सतत पर्यवेक्षण के लिए जिला जनगणना समन्वय समिति का गठन कलेक्टर की अध्यक्षता में किया गया है।

कलेक्टर कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार गठित समिति में प्रमुख जनगणना अधिकारी कलेक्टर अध्यक्ष रहेंगे। जिला जनगणना अधिकारी एवं अपर कलेक्टर संयोजक होंगे तथा जिला योजना अधिकारी, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी, सहायक आयुक्त जनजाति कार्य विभाग, परियोजना अधिकारी जिला शहरी विकास अभिकरण तथा जिला जनसंपर्क अधिकारी सदस्य के रूप में मनोनित किए गए हैं।

विधानसभा सत्र के लिए कार्यालयों में विशेष व्यवस्था

बड़वानी। मध्यप्रदेश विधानसभा का बजट सत्र 1 फरवरी से 3 मार्च 2026 तक जारी रहेगा। सत्र के दौरान जिले को प्राप्त होने वाले प्रश्नों के उत्तर भेजने के लिए कार्यालयों में विशेष व्यवस्था की गई है। कलेक्टर श्रीमती जयति सिंह ने इसे संबंधित प्राप्त होने वाले सभी तरह के विधानसभा प्रश्नों के उत्तर समय-सीमा में भेजने के लिए अपर कलेक्टर सोहन कनाश को नोडल अधिकारी बनाया है।

जबकि प्राप्त होने वाले प्रश्नों के संधारण के लिए कलेक्टरेट के सहायक ग्रेड-3 नीरज अवस्थी को अधिकृत किया है। सभी जिला अधिकारी उन्हें प्राप्त प्रश्नों को व उनके भेजे जाने वाले उत्तरों को नोडल अधिकारी व अधिकृत अधिकारी के यहां संधारण पंजी में अनिवार्य रूप से दर्ज कराएंगे। वहीं अधिकृत अधिकारी प्रतिदिन प्राप्त होने वाले प्रश्नों की पंजी में प्रविष्टि कर संबंधित अधिकारी को भिजवाएंगे तथा निर्धारित समय के पूर्व उनका उत्तर भिजवाया जा चुका है का प्रतिदिन परीक्षण कर भेजे गए प्रश्नों के उत्तर की पंजी को प्रविष्टि करेंगे। वहीं राज्य सूचना केंद्र को निर्देशित किया है कि वह प्रतिदिन ई-मेल चेक प्राप्त विधानसभा नोडल अधिकारी एवं अधीक्षक को उपलब्ध कराए। साथ ही कलेक्टर ने समस्त विभाग प्रमुखों को यह आदेशित किया है कि विधानसभा सत्र की कालावधि में बिना पूर्व अनुमति प्राप्त किए कोई भी अधिकारी/कर्मचारी अवकाश पर प्रस्थान नहीं करेंगे और न ही बिना अवगत कराएं मुख्यालय छोड़ेंगे।

पाटी में हाई रिस्क गर्भवती का हुआ सुरक्षित प्रसव

ममता सखी की सजगता और समर्पण ने बचाई जच्चा-बच्चा की जान

बड़वानी। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की सक्रियता और सही समय पर दी गई समझाईश किस तरह जीवन रक्षक साबित हो सकती है, इसकी एक बानगी ग्राम पंचायत पाटी में देखने को मिली। ममता ब्रिगेड की ममता सखी श्रीमती सुरलीबाई सोलंकी और आशा कार्यकर्ता राजकला सोलंकी के निरंतर प्रयासों से एक हाई रिस्क गर्भवती महिला का सुरक्षित संस्थागत प्रसव संपन्न हुआ।

लगातार गृह भ्रमण और काउंसलिंग का मिला फल -

पाटी क्षेत्र की 21 वर्षीय गर्भवती महिला श्रीमती चेतना पति इकराम को स्वास्थ्य जांच के दौरान हाई रिस्क श्रेणी में रखा गया था। जोखिम को देखते हुए ममता सखी और आशा कार्यकर्ता द्वारा लगातार महिला के घर जाकर गृह भ्रमण किया गया। उन्होंने महिला और उसके परिजनों को घर पर प्रसव कराने के खतरों के प्रति सचेत किया और संस्थागत प्रसव के महत्व को समझाया।

समय पर अस्पताल पहुंचाने से मिली सफलता -

22 जनवरी 2026 को सुबह लगभग 6 बजे महिला को प्रसव पीड़ा शुरू हुई। सूचना मिलते ही स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की तत्परता से सुबह 7.32 बजे महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाटी पहुंचाया गया। अस्पताल में उचित चिकित्सकीय देखरेख के बीच शाम 7.20 बजे महिला ने एक स्वस्थ बालक को जन्म दिया।

शिशु की विशेष देखभाल - जन्म के समय बालक का वजन 1.900 किलोग्राम था। कम वजन होने के कारण शिशु को बेहतर देखभाल के लिए एनबीएसयू पाटी में 4 दिनों तक भर्ती रखा गया। चिकित्सकों और स्टॉफकी निगरानी में उपचार के बाद बच्चा पूरी तरह स्वस्थ है। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद भी आशा कार्यकर्ता द्वारा नियमित रूप से गृह भ्रमण कर जच्चा-बच्चा के स्वास्थ्य की निगरानी की जा रही है। वर्तमान में माँ और बच्चा दोनों पूरी तरह स्वस्थ हैं। स्वास्थ्य विभाग ने सुरलीबाई और राजकला सोलंकी के इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा की है, जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी परिवार को अस्पताल आने के लिए प्रेरित किया।